मन्सा सेवा - 50

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **'शुभ भावना' मन्सा-सेवा का बहुत श्रेष्ठ साधन है और 'श्रेष्ठ भाव" सम्बन्ध-सम्पर्क में सर्व के प्यारे बनने का सहज साधन है। जो सदा हर एक प्रति श्रेष्ठ भाव धारण करता वही माला का समीप मणका बन सकता है। क्योंकि माला सम्बन्ध-सम्पर्क में समीप और श्रेष्ठता की निशानी है।**

➳ _ ➳ **कोई किसी भी भाव से वोले वा चले लेकिन आप सदा हर एक प्रति शुभ भाव, श्रेष्ठ भाव धारण करो। जो इसमें विजयी होते हैं वही माला में पिरोने के अधिकारी हैं।** चाहे सेवा के क्षेत्र में भाषण नहीं कर सकते, प्लैन नहीं बना सकते लेकिन जो हर एक से सम्बन्ध-सम्पर्क में शुभ भाव रख सकते हैं, तो यह 'शुभ भाव सूक्ष्म सेवा-भाव में जमा हो जायेगा।

➳ _ ➳ **ऐसे शुभ भाव वाला सदा सभी को सुख देगा, सुख लेगा। तो यह भी सेवा है और यह सेवा-भाव आगे नम्बर लेने का अधिकारी बना देगा। इसलिए माला का मणका बन जायेंगे।** समझा? कभी भी ऐसे नहीं सोचना कि हमको तो मन्सा सेवा भाषण करने का चांस ही नहीं मिलता है, बड़ी-बड़ी सेवा का चांस नहीं मिलता।

➳ _ ➳ **लेकिन यह 'सेवा-भाव' का गोल्डन चांस लेने वाला चान्सलर की लाइन में आ जायेगा अर्थात् विशेष आत्मा बन जायेगा। इसलिए इस वर्ष में विशेष यह 'शुभ भावना' और 'श्रेष्ठ भाव' धारण करने का विशेष अटेन्शन रखना। (09/01/1993)**

➢ **5 प्रकार के मुड़**

➳_ ➳ **क्वेश्चन मार्क का मुड़**

→ किसी ने कुछ कहा

→ ऐसा क्यों

→ ऐसा तो नहीं होना चाहिये

➳_ ➳ **आश्चर्य का मुड़**

→ ऐसा भी होता है!

→ यहाँ पर भी

- दुसरो के प्रति हमारी ज्ञान योग की अपेक्षाये ज्यादा होती है
  - हम तो नही चलते है
  - पर इन्हों को चलना चाहिये
  - हमको नींद आती है ठीक है

- पर इन्होको नींद नही आणि चाहिए
- हम तो नही करते है
- पर हमे ये होता है, की इन्हें करना चाहिये

➳_ ➳ **CONFUSION का मुड़**

→ TO BE OR NOT TO BE

→ मुंजे हुये रहते है

→ करना क्या है, वह समझ में ही नहीं आता है

→ हर बात में CONFUSION होगा

➳_ ➳ **TENSION का मुड़**

→ हर बात में टेंशन लेता रहेगा

➳_ ➳ **ATTENSION का मुड़**

➳_ ➳ **संगमयुग की परालब्ध है**

→ **<u>एक ही, एकरस मुड़ रहे</u>**

- जो बाप के गुण
  - वो मेरे गुण
- जो बाप की स्टेज
  - वो मेरी स्टेज

➢➢ हरेक के प्रति श्रेष्ठ भाव और शुभ भाव कैसे उत्पन हो ?

➳_ ➳ हर एक का **पार्ट** अपना अपना है

➳_ ➳ हर एक **भाग्य** अपना अपना है

➳_ ➳ हर एक की **बीमारी** अपनी अपनी है

➳_ ➳ हर एक की **कमजोरी** अपनी अपनी है

➳_ ➳ हर एक की **प्रालब्ध** अपनी अपनी है

➳_ ➳ हर एक की **कर्म गति** अपनी अपनी है

➳_ ➳ हर एक के **संस्कार** अपने अपने है

➳_ ➳ हर एक का **स्वभाव** अपना अपना है

➳_ ➳ हर एक की **विशेषता** अपनी अपनी है

➳_ ➳ हर एक के **गुण / अवगुण** सबके अपने अपने है

→ हमे हर आत्मा के **स्वभाव संस्कार को जानना** है

→ और **समझना** है

- और उसी रीती से हमे स्वयं को
  - **मोल्ड** करना है
  - **ADJUST** करना है

➳_ ➳ **सम्बन्ध सम्पर्क में हरेक आत्मा के प्रति शुभ भाव और श्रेष्ठ भाव रखना है**

➢➢ 10 WORDS TO CREATE POSITIVE VIBRATION

➳_ ➳ 1..जो भी सेवा मिले उसमे तुरंत **'YES'** करो

➳_ ➳ 2..**I AGREE** (मै सहमत हु)

➳_ ➳ 3..**I APPRECIATED**

➳_ ➳ 4..**THANK YOU**

➳_ ➳ 5..**I LOVE IT / I LIKE IT**

➳_ ➳ 6..**IT FEELS GOOD TO ME** (यह मुझे अरछा लगता है)

➳_ ➳ 7..**I AM BLISSED** (मुझे ख़ुशी है)

➳_ ➳ 8..**IT IS GOOD**

➳_ ➳ 9..**HOW / WHAT**

➳_ ➳ 10..**NON VERBAL**

➢➢ पुरुषार्थ के मुख्य बिंदु

➳_ ➳ आत्मा 2 शारीर में निवास करती है

→ सूक्ष्म शरीर

→ स्थूल शरीर

➳_ ➳ **सूक्ष्म शरीर अर्थात संकल्प के वाइब्रेशन**

→ हम जैसे संकल्प करेंगे उसी अनुसार आत्माओ पर हमारा प्रभाव पड़ता है

- जैसे वाइब्रेशन हम अन्य आत्माओ के प्रति रखते है
  - वैसे उन तक पहुचता ही है

➳_ ➳ **इसलिए हमे सर्व आत्माओ के प्रति शुभ भाव और श्रेष्ठ भाव रखना है**

→ चाहे परिस्थितिया कैसी भी क्यों न हो

- परिस्थितियों के सागर में हमे
- **अपना बुध्धि का हाथ बाबा हाथ में दे देना है**
  - तो हम समस्याओ के सागर से पार हो जायेंगे

➳_ ➳ हमे बेहद में रहना है

→ जहा जहा हद है

- तो उससे हमे दुःख ही मिलेगा

→ NO.1 भाग्यशाली आत्मा की निशानी है

- सदा बेहद में रहना